भगवत् कृपा

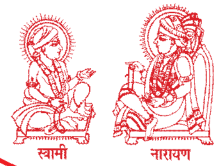

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 26 अंक : 2 | 15.3.2003 शनिवार (मार्च - अप्रैल) | वार्षिक चंदा : 50.00

निमंत्रण

आओ - आओ

प.पू. काकाजी महाराज के लाड़ले मानसपुत्र
प.पू. गुरुजी के 66वें प्रागट्यदिन के उत्सव पर
30 मार्च, 2003 रविवार की सायं 5:30 बजे
मा. श्री अरूण शौरीजी
(केंद्रीय संचार एवं सूचना प्रोद्योगिकी और विनिवेष मंत्री)
प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी,
प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. निर्मलस्वामिजी,
प.पू. महेन्द्र बापू, प.पू. भरतभाई
और
ताड़देव – मुंबई के दिव्य भाईयों की निश्रा में
एवं
मा. श्री काशीरामभाई राणा *(केंद्रीय वस्त्रमंत्री)*
मा. श्री दीपचंद बंधुजी
(मंत्री– उद्योग, पर्यावरण, वन व वन्य जीव, श्रम, रोज़गार एवं चुनाव-दिल्ली सरकार)
तथा अन्य महानुभावों की उपस्थिति में
प.पू. काकाजी महाराज की स्मृति डाक टिकट प्रस्तुत करेंगे।
हम सभी सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित उपस्थित रह कर
स्वयं को कृतज्ञ करें।

— योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

'जिस संत में बिराजे प्रभु आठों प्रहर उसे मिली आज सरकार की मोहर'

चिरंजीव स्मृतियों का खज़ाना लेकर आई-आई खुशियों की मंगल घड़ियाँ... **13 मार्च**– हमारे प्यारे प.पू. गुरुजी की जन्मजयंती ! जो हर साल की तरह मार्च के आखिरी रविवार, यानि अबकी **30 मार्च** को 'ताड़देव' के परिसर में मनाएंगे...

अभी तो पिछले साल प.पू. काकाजी के साक्षात्कार स्वर्णजयंती व प.पू. गुरुजी की जयंती की स्मृतियाँ हर एक की चित्तपट्टी पर छाई हुई ही थी कि दोबारा यह उत्सव हम सब को नई चिरंजीव स्मृतियाँ देने आँगन में आ खड़ा हुआ !

पर, **अबकी बार प.पू. गुरुजी की जयंती बृहद् गुणातीत समाज के लिए ऐतिहासिक बनी रहेगी,** क्योंकि 30 मार्च, 2003 रविवार की शाम को ही **भारत सरकार** हम सब के प्राणाधार **प.पू. काकाजी के साक्षात्कार स्वर्णजयंती के उपलक्ष्य में उनकी स्मृति डाक टिकट जारी कर रही है। समग्र गुणातीत समाज– सारे अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संप्रदाय के लिए ही नहीं, अपितु बृहद् गुजरात के लिए यह अत्यधिक गौरव का विषय है।**

ऐसी एक डाक टिकट जारी करते हुए **श्री प्रमोद महाजनजी** ने **'स्मृति डाक टिकट'** का महत्त्व खूब ही अच्छी तरह बताया है–

'भारत रत्न के रुप में मिलते सर्वश्रेष्ठ सम्मान से भी यह बढ़ कर है, क्योंकि 'भारत रत्न' पुरस्कार तो एक दिन मात्र का उत्सव है, जबकि स्मृति डाक टिकट जारी करने पर वो विभूति इतिहास का एक हिस्सा बन जाती है। फिर, यह टिकट भी तो सारे देश में उपलब्ध होगी– मिल पाएगी ! यूं यह भारी सम्मान की बात है।'

प.पू. काकाजी जैसी प्रभुधारक विभूति की डाक टिकट जारी करके वास्तव में तो भारत सरकार ने स्वयं को सम्मानित किया है, क्योंकि प.पू. काकाजी जैसी विभूतियाँ तो सांसारिक लोकप्रियता, ऐसी ख्याति व कीर्ति से खूब परे होती है। **गंगा की भांति उनकी महिमा तो स्वतःसिद्ध है।**

भारत सरकार जब प.पू. काकाजी को इतना सम्मान दे रही है, तब जो प.पू. काकाजी ने हमें प्रभु दिए - हमारे लिए इतना कुछ किया इनके इस अवसर पर हमें तो सिर्फ हाज़िर रह कर अपने आप को कृतकृत्य करना है !

ऐसी डाक टिकट भी तो अमूल्य कही जाए.... **इसका प्रयोग लिफाफे पर चिपकाने मात्र का नहीं, बल्कि घरों में बने देवस्थान में रखने तक का है ! अरे ! यह स्मृति डाक टिकट देश-विदेश में पहुँचेगी और जाने-अनजाने जिन्हें-जिन्हें प.पू. काकाजी की मूर्ति का दर्शन हो जाएगा उनका तो बेड़ा पार...!!**

कल्याण की कैसी औदार्यपूर्ण रीति ! **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** ने सच ही कहा है– **'बड़े संत और हमारे वर्तने में तो फर्क नहीं है, पर समझ में फर्क रहता है। हमारा वर्तन होता है निजी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए– निजी महत्त्वाकांक्षा की सिद्धि के लिए, जबकि ऐसे संत का पूरा जीवन-पल पल की क्रियाएं प्रभु प्रेरित व दूसरों के कल्याण-श्रेय हेतु ही होती हैं।'** प.पू. गुरुजी के हर एक उद्यम - व्यवहार के पीछे की भावना को यदि गहराई से दखेंगे तो यह बात नज़र आएगी।

7 मार्च 1986 में प.पू. काकाजी ने जब स्थूल शरीर से हम सब के बीच में से विदाई ली... हम सब तो एकदम टूट जैसे गए, पर प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की कमी कभी महसूस नहीं होने दी... नया-पुराना जो भी प.पू. गुरुजी के संबंध में आता है, उसे लगता ही है कि प.पू. काकाजी गए ही नहीं हैं...सच, पारस से पारस का निर्माण हुआ ! प.पू. काकाजी ने हमें समर्थ सारथी दे दिया... धन्य-धन्य संत सुजान को...

प.भ. मल्कानी अंकल के फार्म हाऊस पर एक बार **प.पू. पप्पाजी** ने प.पू. गुरुजी के लिए बताया था कि प.पू. गुरुजी ने वच. प्रथम 58 सिद्ध कर लिया है। उसने प.पू. काकाजी को निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निर्मानी, निःस्नेही दिल की सच्चाई से माना, तो आज वो खुद काकाजी स्वरुप ही बन गए !

प.पू. काकाजी के प्रति के प.पू. गुरुजी के लगाव - गुरुभक्ति को देख कर आज हर एक का दिल नतमस्तक हो जाता है। प.पू. काकाजी को अमर रखने, चिरंजीव करने ही मानो प.पू. गुरुजी की क्षण-क्षण, सैकण्ड-सैकण्ड की क्रिया है...

1990 में 24 फरवरी के दिन प.पू. गुरुजी के परिश्रम से दिल्ली सरकार द्वारा अशोक विहार के मेईन रोड का नाम **'स्वामिनारायण मार्ग'** व वहां से अशोक विहार फेस-3 में प्रवेश करती लेन का नाम **'काकाजी लेन'** रखा गया और अब यह **स्मृति डाक टिकट** के लिए भी दिन-रात देखे बिना परिश्रम करके 'अजोड़

गुरुभक्ति' का आदर्श उन्होंने हम सभी के लिए रखा है। एक बार तो उन्हें तेज़ वायरल फीवर था, फिर भी फोन पर उन्होंने माननीय श्री काशीरामभाई राणा साहेब को कहा कि मिनिस्टर की एपोईन्टमेन्ट अब भी मिले तो मैं आ जाऊँगा, जबकि तब रात को करीब ग्यारह बजे थे !

11 साल पहले गुरुहरि योगीजी महाराज की जन्म शताब्दी **पर डाक टिकट निकली** और उनके बाद अब प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी हो रही है, जो कि अपने आप में एक सांकेतिक घटना है। **गुरुहरि योगीजी महाराज ने जिसे साक्षात्कार के लिए चुना, आध्यात्मिक धुरा सौंपी... आज उन्हीं के वारिसदार की टिकट प्रकाशित हो रही है...**

वाकई प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी होना प.पू. गुरुजी की गुरुभक्ति के फलस्वरूप मिला प्रभु का प्रसाद– एक कृपा-करिश्मा ही कहा जाए... क्योंकि फिलहाल ना तो हमारी ऐसी कोई समाज सेवा की प्रवृत्ति है... ना ही कोई ऐसी बड़ी एप्रोच है। फिर भी प.पू. गुरुजी ने तब कहा था– **'हमने तो ब्रह्मांड में यह संकल्प फेंक दिया... अब तो काकाजी सारे चक्र गतिमान करेंगे। सो, देर-सवेर यह स्टेम्प तो अब निकलेगी ही।'** एक बार तो यहां तक भी बोल गए कि– **'दिसंबर तक में यह तय हो भी जाएगा'** और... वाकई 12 नवम्बर को तो टिकट जारी करने का सरकार के निर्णय के बारे हमें डाक विभाग से पत्र मिल गया ! सच में **यह एक असंभव काम शक्य हुआ है।** ऐसे प्रसंगों पर प.पू. काकाजी द्वारा प.पू. गुरुजी को दिए आशीवर्चन कि– **'तुम्हारे संकल्प और प्रार्थना में भी अचूक ताकत है'– वह याद आ जाता है।** बेशक, ये उपलब्धियाँ प.पू. काकाजी की कोई विशेषता या प्रसन्नता का प्रमाण नहीं है। पर, प.पू. गुरुजी का यह मनोरथ पूरा करके प.पू. काकाजी ने हमें दृढ़ प्रतीति कराई है कि तुम यदि सच में केवल प्रभु के होकर, प्रभु का बल लेकर सिन्सियरली दिल की सच्चाई से हमारे सिद्धांत पर अग्रसर रहोगे, तो मैं तुम्हारे सारे मनोरथ - मुरादें जरूर पूरी करूंगा।

मई 2002 में तो प.पू. गुरुजी ने इसकी अर्जी करी थी, पर ऐसा घटनाक्रम चला कि प.पू. गुरुजी से खूब अपनेपन से जुड़े **माननीय श्री काशीरामभाई राणा साहेब** ने पुण्य सहयोगी बन कर सात महीने में ही यह काम संपन्न कराया ! डाक विभाग के अफसर तक बोल पड़े कि छः महीने में यह काम हो ही नहीं सकता, क्योंकि कम से कम दो साल पहले तो अर्जी करनी पड़ती है...... **प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी (रानीखेत)** भी डाक टिकट की अर्जी की शुरुआत से लेकर आख़िर तक प.पू. गुरुजी के इशारे पर हाथ-पाँव मारते रहे..... **उनके इस भक्तिभरे सहयोग से उन्होंने प.पू. गुरुजी के अंतर की प्रसन्नता पा ली है।** साथ ही प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी के मित्र **प.भ. महेशजी** ने भी अल्प परिचय में ही खूब अपनेपन से डाक टिकट के इस कार्य में जो अत्यधिक सहकार दिया उसके लिए खूब-खूब धन्यवाद !

सबसे पहले तो, प.पू. काकाजी की स्मृति डाक टिकट निकालने का विचार आना ही एक अनोखे भक्ति भरे दिल का संपूर्ण परिचय है। 31 अक्टूबर 2002 को **परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी** दिल्ली मंदिर पधारे थे। तब प.भ. मल्कानी साहेब के फार्म हाऊस पर जाते हुए गाड़ी में प.पू. स्वामिजी ने प.भ. मल्कानी साहेब को कहा कि–

'यह काम गुरुजी के सिवा और कोई नहीं कर सकता था।'

प.पू. साहेब ने भी यह बात सुनते ही प.पू. गुरुजी को पूछा कि–

'गुरुजी ! आपको यह विचार आया कैसे ?'

वर्षों पहले प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को एक आशीर्वाद पत्र में लिखा था–

'तुम्हारे द्वारा बड़े-बड़े अद्भुत कार्य, सत्कर्म होंगे...'

आज प.पू. काकाजी के दिए आशीर्वाद साकार हो रहे हैं।

प.पू. गुरुजी की प्रवृत्ति के बारे....... आज छोटे-बड़े सभी के जीवन में प.पू. गुरुजी ने अलग ही स्थान लिया है। प.भ. मोतीलाल बाजवानजी के संबंध से उनके एक साथीदार प.भ. राजीव कायलाजी सत्संग के जोग में आए और धीरे-धीरे बहुत ही अपनेपन से प.पू. गुरुजी के साथ जुड़ गए। माँ-पिता के साथ बच्चे भी सत्संग से सहज ही जुड़ जाते हैं। उनके 11 साल के लड़के 'आदित्य' का जन्म दिन आया, तो माँ-पिता ने उससे पूछा कि कल जन्म दिन कैसे मनाना है ? तुम्हें कहां घुमाने ले चलें वगैरह... आदित्य ने फट् से कहा कि कल आप दोनों ऑफिस से छुट्टी ले लो। हम तीनों मंदिर चलेंगे और कल सारा दिन मंदिर में प.पू. गुरुजी के पास ही रहेंगे !11 साल के इस बच्चे की चित्तपट्टी पर प.पू. गुरुजी कैसे छा गए होंगे ? तभी उस बच्चे ने पूरा दिन मंदिर में प.पू. गुरुजी के पास रहना पसंद किया; जबकि जगत में तो ऐसे दिन गिफ्ट एवं पीज़ा, आईसक्रीम वगैरह की और घूमने आदि की बच्चों की कई-कितनी फरमाईश होती हैं।

ऐसा ही एक दूसरा प्रसंग.... प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी होने का उत्सव 30 मार्च 2003 प.पू. गुरुजी के जन्म दिन पर ही करना तय हुआ। सेवा की बातें भी चल रही थी। सभी भक्तों के मन में भी ऐसी भावना हो रही थी कि प.पू. काकाजी की स्मृति

डाक टिकट जारी करी जा रही है, जो कि बहुत ही गौरव की बात है; तो हम उसमें क्यों ना अपना योगदान दें ? प.भ. अनिलजी ने घर में यह बात करी... उनके लड़के 'दिव्यांग' का 16 जनवरी को जन्म दिन आने वाला था, तो उसने अपने मम्मी-पापा को कहा कि अब की बार मुझे जन्म दिन का कोई तोहफा नहीं चाहिए। वे पैसे प.पू. काकाजी के फ़ंक्शन के लिए हमें प.पू. गुरुजी को देने हैं।

उनकी पत्नी सौ. निशि ने बताया कि इस साल नए कपड़े वगैरह कुछ भी नया सामान खरीदे बिना, घर के छोटे-छोटे खर्चों में कटौती करके रूपये जोड़ने हैं। प.भ. अनिलजी को जब पूछा कि आपके पास काम-बिज़नेस तो अभी इतना है नहीं, फिर भी सेवा की यह कसनी ? तो उन्होंने जवाब दिया कि– **'काम वगैरह के उतार-चढ़ाव तो चलते रहेंगे। उसकी वज़ह से यह सेवा का मौका क्यों खोना ?'** सच, भक्तों की भावना देख कर दिल गिलगिला हो जाता है। **धन्यवाद-धन्यवाद प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी को जो हमें ऐसे आत्मबुद्धि, प्रीति के समाज में रख दिया।** छोटे बच्चे तक के मन में ऐसा हो कि मुझे जन्म दिन का तोहफा नहीं चाहिए बल्कि सेवा देनी है ! धन्यवाद-धन्यवाद भक्तों की ऐसी भक्ति-भावना को !

प.पू. गुरुजी अपनी बातों में अक्सर कहते हैं कि हमने हमारे जीवन में जगत को पहला स्थान दिया है या सत्संग को दिया है वह तो ऐसे ऐन मौके पर ही पता चलता है। आज दिल्ली की धरती पर प.पू. गुरुजी को– सत्संग को प्रथम स्थान देता हुआ एक 'आध्यात्मिक समाज' दिखाई पड़ता है, वह निम्न प्रसंग से पता चलता है–

25 फरवरी 2003 की शाम को सौ. सुधाभाभी बाजवान अक्षरज्योति आए हुए थे। 30 मार्च 2003 को मनाए जाने वाले प.पू. गुरुजी के जन्म दिन व प.पू. काकाजी की स्मृति डाक टिकट के बारे की बातें चल रही थी। उन बातों दौरान सौ. सुधा बाजवान ने बताया कि उनके एक नज़दीकी रिश्तेदारी में किसी लड़की की शादी की तारीख तय हो रही थी, तो उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि 30 मार्च की शादी यदि रखोगे तो हम शादी में नहीं आ पाएंगे, क्योंकि उस दिन हमारे मंदिर में हमारे प.पू. गुरुजी का फंक्शन है। उनकी बात सुन कर विचार आता है कि प.पू. गुरुजी आज हर एक जीवन में कितनी हद तक बस गए हैं कि 'प्रथम स्थान साधु का... बाकी सब बाद में !'

कई बार तो भक्तों की भावना देख कर दिल रो पड़ता है। प.पू. काकाजी के समय के पंजाब के पुराने जोगी **प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी** से जब किसी ने पूछा कि–आप अपना नया मकान बनवाना शुरु क्यों नहीं करते ? तो वे एकदम बोल उठे कि– **'अक्षरज्योति' की बहनों का आश्रम जब तक पूरा नहीं होता, तब तक मुझे अपना मकान बनाने की इच्छा नहीं होती...'** कैसी आत्मबुद्धि व प्रीति ! धन्यवाद-धन्यवाद भक्तों के अजोड़ अपनेपन को। प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के अथक् परिश्रम से ऐसा समाज तैयार हुआ है। **साधु की एसेट भी तो ऐसी निष्ठा वाले आत्मीय परिवार ही कहे जाएं ना !**

आज प.पू. गुरुजी के प्रति लगाव के कारण हर एक मुक्त सत्संग में तो ठीक पर घर में– यहां तक कि अपनी रिश्तेदारी में, ऑफिस में मान-अपमान के प्रसंगों पर यह सोच कर पीछे हठ करता है कि उसके ऐसे कोई वर्तन से प.पू. गुरुजी को दुःख ना पहुँचे या उन पर उंगली ना उठे कि ये किस प्रकार के सत्संग में जाते हैं ?

प.पू. गुरुजी भी तो इतनी ऊँची कक्षा पर होते हुए हर एक की कक्षा पर आकर रसबस होते हैं... एक ही व्यक्ति का छोटे-बड़े सभी को यह भीतर में एहसास करा देना कि ये मेरे ही हैं वह एक अचरज ही है ना ? कईयों को सारा दिन प.पू. गुरुजी की मूर्ति ही अपनी आँखों के सामने रहती है। कईयों को सपने में हल तक मिलते हैं। कई आकर कहते हैं कि आज तो प.पू. गुरुजी सारी रात सपने में मेरे साथ रहे। ब्रह्म की शक्ति के सिवा यह कार्य हो ही नहीं सकता। भगवान कृष्ण के बारे कहा जाता है कि कृष्ण को देखते ही सब उसमें खींचे जाते थे। प्रथम दर्शन में ही वे हर एक के चित्त पर अपना अधिकार कर लेते थे। हर गोपी को लगता था कि कृष्ण मेरे हैं। उन्हें हर जगह कृष्ण ही कृष्ण दिखाई देते थे। सारा दिन वही अनुसंधान...सो ही कहे गए **'आकर्षति इति कृष्णः !' वैसा ही आज सभी को प.पू. गुरुजी के बारे महसूस होता है।**

ऐसा कहा जाता है कि प्रकृति व प्रारब्ध का परिवर्तन नहीं हो सकता, वह तो जीव के साथ ही जाते हैं। पर, गुणातीत संत के संबंध से प्रकृति का परिवर्तन एवं प्रारब्ध का टलना शक्य हुआ है ! प.पू. गुरुजी के संबंध में आए हुए हर एक को भीतर में तो शांति होती है, साथ ही साथ हर एक के स्वभाव में परिवर्तन भी आता है।

प.पू. गुरुजी ने एक बार कथावार्ता दौरान बताया था कि प.पू. काकाजी कहते थे– **'चाहे किसी भी कारण व कैसे भी कोई हमारे संपर्क में आए, उसके साथ कॉमर्शियल एटीट्यूड नहीं रखना कि– 'उससे हमारा काम निकल जाए'। हमारी थोड़ी-सी भी सेवा के फलस्वरूप उसके जीवन में प्रभु बस जाने चाहिए। हमारे साथ उसका हमेशा का संबंध बन जाना चाहिए।'**

इतने सालों के दौरान हमने प.पू. गुरुजी के जीवन में देखा है कि जाने-अनजाने कोई भी चाहे किसी भी काम के जरिए उनके संबंध में आया होगा, उसका प्रभु व संत के साथ एक 'संबंध' बन गया ही है। जैसे श्री एन. के. अग्रवालजी, श्री प्रेम कुमार साहेब, श्री रोमेश भंडारीजी मंदिर की जमीन के निमित्त सपर्क में आए और प.पू. गुरुजी के साथ जुड़ गए। श्री महेन्द्र कपूरजी एवं उनके सुपुत्र श्री रोहन कपूर मार्च 2002 में प.पू. काकाजी के साक्षात्कार स्वर्णजयंती पर दिल्ली मंदिर आए। तो उनसे एक पारिवारिक-सा संबंध ही बन गया ! यहां तक कि मंदिर में जनरेटर फिट करने निमित्त आए प.भ. सुशीलजी व पूरा परिवार, पानी की लाईन देने के निमित्त आए प.भ. प्रकाशचंदजी भी मंदिर के निजी अंग जैसे ही बन गए ! **कॉमर्शियल बेझीस पर सिर्फ अपना काम निकालने की ही भावना होगी, तो सामने वाले के भीतर को संत टच नहीं कर पाएंगे और यदि संत स्पर्श कर पाता है– सामने वाले के भीतर में बैठ जाता है, तो जरूर समझना कि वह संत नितांत निःस्वार्थ और प्रभुधारक विभूति ही है। सच ! प.पू. काकाजी हमें प.पू. गुरुजी के रूप में कैसी अनुपम भेंट दे गए हैं ?**

2002 में मनाई गई साक्षात्कार स्वर्णजयंती की विडियो कैसेट **'आस्था' चैनल** पर दिखाने निमित्त उसके डायरेक्टर **श्री अजीत गुप्ताजी** कोन्टेक्ट में आए और प.पू. गुरुजी की सादगी, साधुता व सहजता देख कर बोले थे कि–
'मैं 152 धर्मगुरुओं को मिला हूँ, पर प.पू. गुरुजी के पास आकर मुझे कुछ अलग ही अपनापन मिला है... मैं सब जगह तो कोमर्शियली अपने काम के लिए जाता हूँ, क्योंकि मेरा पेशा ही ऐसा है। पर यह पहला मंदिर है जहां मैं बिना काम के अपने आप आता हूँ।'

चेतना को छू करके उसके भीतर यूं बैठ जाना वह 'गुणातीत' साधु की ही तो केपिसिटी हो सकती है।

12 जनवरी 2002 को संक्रांति भिक्षा के लिए एक मुक्त ने पुछवाया था कि– **'गुरुजी पेस्ट कौन-सी लाऊं ?'** यानि मंदिर में कौन-सी पेस्ट काम में आएगी। तो प.पू. गुरुजी ने जवाब में कहलवाया कि– **'पप्पाजी ने मुझे बार-बार लिखा है, तो मुझे तो अब निर्दोषबुद्धि की पेस्ट ही इस्तेमाल करनी है।'** प.पू. गुरुजी की बात सुन कर प.पू.काकाजी का प्रसंग इदम् स्मृति में आया कि जब ताड़देव के भाईयों में कुछ बहस चल रही थी कि प.पू. काकाजी को कौन-सा साबुन पसंद है; तब प.पू. काकाजी एकदम बोले थे कि– **'मुझे तो सुहृद्भाव का साबुन पसंद है।'** प.पू. गुरुजी की रहस्यमयी बातों का निचोड़ भी यही लगता है कि प.पू. काकाजी के– **'सुहृद्भाव व निर्दोषबुद्धि के सिद्धांत से हम सब जीएं !'**

साक्षात्कार स्वर्णस्मृति के अवसर पर प्रार्थना करके कृतनिश्चयी बनने का जब हमें अद्भुत मौका मिल रहा है और वे तो लुटाने ही बैठे हैं, तो हम गरजु बन कर अपनी हठ, मान, ईर्ष्या, मान्यताओं, मूल्यांकनों की आहुति देने तत्पर बनें और सोने की तरह तप कर निखार को पाए यही प्रार्थना !

✡✡✡

अ. म. मु. भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन

महाप्रभु स्वामिनारायण अनंत जीवों का कल्याण करने धरती पर प्रगट हुए। अपने साथ मू. अ. मू. गुणातीतानंदस्वामिजी को साथ लाकर मानव स्वरूप में धरती पर अखंड प्रगट रहने के वरदान दिए। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का सेवन करके ब्रह्मस्वरूपी स्थिति को पाए ऐसे भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन यानि– **'होली'**।

'साक्षात् श्रीजी महाराज गुणातीतानंदस्वामी द्वारा प्रगट ही हैं और प्रत्यक्ष दर्शन दे रहे हैं'– ऐसी सिद्धांतिक उपासना की बातें करके उन्होंने सब के हृदय में प्रगट उपासना की दृढ़ता कराई। समग्र जीवन गुरु की आँख के इशारे से अभिप्राय समझ कर उसकी मर्जी में मिटने में ही उन्होंने जीवन की सार्थकता मानी। देह को गिने बिना सेवा करके भावि पीढ़ी के लिए देहभाव से पर होने के लिए आदर्श स्थापित किया। संबंध वालों में निर्दोषबुद्धि दृढ़ करके दासत्व भक्ति करी और गुणातीत के साधर्म्य को पाए। द्वेषियों ने कई तरह से भगतजी महाराज को खूब परेशान किया, अनेक कसौटीयों-अवरोधों से गुजरना पड़ा, पर गुरुभक्ति के बल से हंसते मुँह इन सभी विपरीत प्रसंगों को भगतजी ने गुरु का प्रसाद ही माना। मान-अपमान में एकता रख कर मन की स्थितप्रज्ञता कैसे रखनी वो अपने वर्तन से बताया। सभी को **ब्रह्म की मूर्ति मान कर** सेवा करनी, पर भगवान के भक्त का अभाव तो कभी लेना ही नहीं और गुरु के वचन में टुक-टुक वर्तने का अनुपम आदर्श रखा।

एक बार मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी बहुत राजी हुए और कहा कि तुम साठ हजार रुपये महीने

कमाओगे, जगत में सुखी रहोगे। पर, भगतजी महाराज ने स्त्री-धन के सुख को ठुकरा कर मांगा कि– **'मेरा जीव सत्संगी बनाओ, मुझे आपका घर बताओ, मुझे आपका ज्ञान दो...'**

भगवान स्वामिनारायण की कल्याणपीढ़ी के वारिसदारों में अ.म.मु. भगतजी महाराज का जीवन हर एक साधक के लिए गुरुभक्ति व सेवा-भावना के दीप जला कर साधना पथ को सदा-सदा के लिए प्रशस्त करता रहेगा। कोटि-कोटि वंदन हो सेवामूर्ति अ.म.मु. भगतजी महाराज की अजोड़ गुरुभक्ति को !

✡ ✡ ✡

ठहरावरहित गुरुमुखी यानि– प.पू. साहेब

धूलेण्डी– प.पू. साहेब का प्रागट्य दिन... युवा शक्ति के शूरवीर नेता एवं गुरुहरि योगीजी महाराज ने जिन्हें अपने 'भागीदार' व 80 राहबरों के महारथी कह कर नवाजा... वे आज देश-विदेश में गुरुहरि योगीजी महाराज का संदेश फैलाने अनंत के प्राणाधार-कल्याणदाता बन कर अनेकों की आत्मा को गुलाल यानि– खुशियों के रंगों से भर कर दिव्यजीवन के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं...

प.पू. साहेब का निर्दोष बालक जैसा हास्य प्रथम दर्शन में ही आज हर एक की चित्त पट्टी पर सहज ही छा जाता है। प.पू. साहेब के हर एक वर्तन में 'ब्रह्म की मस्ती' का ही दर्शन होता है। उनकी परावाणी के जोश में बसी महिमा की खुमारी हर एक को सहज ही आकर्षित करती है।

पिछले कई दिनों से प.पू. गुरुजी रोज शाम को प.पू. काकाजी की परावाणी की कैसेट सुनवाते हैं... उन कैसेट्स में प.पू. साहेब की अनहद् महिमा गाते हुए प.पू. काकाजी कई बार बोले हैं... साहेब यानि– 'ठहरावरहित गुरुमुखी' ! प.पू. काकाजी द्वारा बताई प.पू. साहेब की विशेषताएं सुनते हुए मन में सहज होता है कि सच ! प.पू. साहेब सभी गुणातीत स्वरूपों के पास कल्पना से परे की कैसी सरलता रख कर जीवन जीए होंगे कि प.पू. काकाजी के होंठों से उनकी महिमा अनराधार वर्षा के रूप में बरसती ही रहती है !

प.पू. गुरुजी ने एक प्रसंग बताते हुए कहा कि– प.पू. काकाजी के मुख से प.पू. साहेब का इतना अधिक माहात्म्य सुन कर मुझे मन में हुआ था कि मुझे पू. साहेब को जरुर देखना है। एक बार युवकों का समूह दादर मंदिर आने वाला था। प.पू. गुरुजी ने किसी को पूछा कि इनमें से 'जशभाई' कौन से होंगे ? तो उन्होंने बताया कि तुम्हें पूछना ही नहीं पड़ेगा, सभी में पू. साहेब अपने आप अलग ही पहचान में आ जाएंगे और हुआ भी ऐसा कि पू. साहेब को तुरंत अलग ही प.पू. गुरुजी ने पहचान लिया !

प.पू. साहेब की जयंती पर उनके पुनीत चरणों में अंतर की प्रार्थना... 'हे साहेब ! आपने सभी गुणातीत स्वरूपों के साथ अद्‌भुत संबंध दृढ़ किया... ठहरावरहित गुरुमुखी जीकर सभी के दिल की प्रसन्नता प्राप्त की। हम आपकी दिखाई राह पर चल कर प्रगट गुणातीत स्वरूपों को अपनी ओर से निश्चिंत कर पाएं ऐसे अंतर के आशीर्वाद आप हम सब पर बरसाना।'

✡ ✡ ✡

चैत्र शुक्ला नौमी– श्री हरि जयंती

करुणानिधि सर्वोपरि अवतारों के अवतारी **श्री सहजानंद स्वामी महाराज ने संवत् 1837** में चैत्र सुद नोम के महामंगल दिन पर मानवस्वरूप में प्रगट होकर **'छपैया'** गांव को तीर्थ रूप बना कर धन्य किया। धर्मदेव व भक्ति माता को माता-पिता का गौरव प्रदान किया... परब्रह्म तत्त्व स्वयं धरती पर अवतरित हुआ। 11 वर्ष की अल्प आयु में गृहत्याग करके वनविचरण दौरान देवों, साधना करते ऋषियों, सामान्य जन, नदियों, वृक्षों को अपना संबंध देकर आखिर गुजरात को अपना कार्यक्षेत्र बनाया... तीर्थत्व बख़्शा ! धरा पर परम एकांतिक संत द्वारा अपना प्रगटीकरण अखंड रख कर जीवों को सदा सनाथ बनाया। 84 लाख योनियों में जन्म-मरण के चक्करों में घूमते जीवों को 'गुणातीतभाव' में अखंड स्थित संत द्वारा शुद्ध चैतन्य ब्रह्म बना कर परब्रह्म की सेवा करने का अधिकारी बनाया। जीवों के ही प्रारब्ध इस्तेमाल करके उन्हें एकांतिक बनाया !

श्रीजी महाराज की उदात्त कल्याण योजना आज तक के आध्यात्मिक इतिहास में और कहीं देखने को नहीं मिलती। सच ! श्रीजी महाराज की करुणा का पार नहीं है। उन्होंने यहां तक कह दिया कि मेरे हरिभक्त के घर के मटके का जाने-अनजाने भी कोई पानी पीएगा, वह कल्याण का अधिकारी बनेगा ! सर्वोपरि व जीवंत **'स्वामिनारायण मंत्र'** देकर मानो सदैव के लिए मानवजाति को एक रक्षा कवच दे दिया।

सचमुच ! हमें अद्‌भुत भव्य प्राप्ति हुई है... **गुणातीत पुरुषों का सान्निध्य ही हमारे लिए धरती पर अक्षरधाम है।** तो 11 अप्रैल को आ रही श्रीजी महाराज की जयंती के महामंगलकारी दिन दृढ़ संकल्प करके प्रार्थना करें कि मुक्तों की महिमायुक्त सेवा करके गुणातीत स्वरूपों के अंतर की चाहना के मुताबिक हम गुणातीतभाव में रहते हो जाएं।

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के प्रागट्य दिन के अवसर पर...

4 मई......... प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती ! प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी अर्थात् गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा दी गई एक अनमोल भेंट – एक विरल विभूति ! **प.पू. स्वामिजी का पृथ्वी पर प्रागट्य - वह हमारे लिए एक महामंगलकारी उत्सव रूप है।**

आर्षदृष्टा गुरुहरि योगीजी महाराज की पारखी दृष्टि ने '**प्रभुदास**' नाम के इस हीरे को पहचान लिया था। साधु की दीक्षा देते हुए नाम भी कैसा अद्भुत दिया– '**हरिप्रसाद**' अर्थात् **साक्षात् श्रीजी महाराज का प्रसाद सभी को बांटने वाला !** आज प.पू. स्वामिजी देश-विदेश में स्वामिनारायण का संदेशा फैलाकर गुरुहरि के दिए इस नाम को सार्थकता प्रदान कर रहे हैं। हज़ारों लोगों के जीवनप्राण है... अनेकों के कल्याणदाता, मुक्तिदाता बनकर जीवों को प्रभु के रास्ते अग्रसर कर रहे हैं।

हम सब कितने भाग्यशाली ! पारस से पारस करे ऐसे गुणातीत स्वरूपों का जोग हमें बिना कोई तपस्या - साधन किए मौज में - बख़्शिश में दे दिया... इससे भी अधिक ऐसी प्रभुधारक विभूतियों ने खुद ऐसा जीवन जीकर ऐसा आदर्श रखा है, जिससे कि हमें इस रास्ते चलने का बल, प्रेरणा एवं गुरु को राजी करने का रहस्य सहज ही प्राप्त होता है। गुरु को अन्तर्यामी, सर्वज्ञ व निर्दोष मान कर साधक की निगाह यदि केवल गुरु के वचन की ओर हो, तो गुरु की प्रसन्नता के फलस्वरूप उसकी साधना कितनी सरल हो जाती है, यह प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के साधक जीवन का निम्नलिखित प्रसंग सम्यक् दर्शन कराता है।

गोंडल अक्षरमंदिर में तीन दिन के 'हरियाग' की शुरुआत हुई थी। आसो शुक्ल तृतीय के दिन दोपहर को 'पाळियाद बापु' के घर बर्तन लेने पहुँच जाना था। उसी समय प्रभुदासभाई भोजन के लिए भोजनशाला में जा रहे थे। वहां उनकी पत्तल भी परोसी जा चुकी थी और एक साधुराम ने आकर उन्हें कहा– 'ट्रक पाळियाद जा रहा है। वहां से बर्तन लेकर आने हैं। तुम्हें ट्रक के साथ जाना है। मैं तुम्हारे लिए लाडु, मगज, गांठिया और अचार बांध देता हूँ, तुम रास्ते में ट्रक में खा लेना। जल्दी है, सो जल्दी तैयार हो जाओ।'

प्रभुदासभाई तुरंत ही ट्रक की ओर दौड़े, लेकिन जल्दी में वह संत उनका नाश्ता देना भूल गए ! ट्रक में बैठे-बैठे प्रभुदासभाई सोच रहे थे कि 'आज तो महाराज की इच्छा उपवास करवाने की होगी, तो मैं राजी-खुशी से ही व्रत क्यों कर ना लूं ? महाराज को यदि उपवास नहीं करवाना होता, तो वह संत नाश्ता देना भूल ना जाता।'

उस दिन रात को बहुत देर से दो-तीन बजे बर्तन लेकर ट्रक अक्षरमंदिर में वापिस आया। प्रभुदासभाई तो बर्तन उतार कर उन सभी की साफ-सफाई करने में लगे। सतत् दो-तीन घंटे तक खूब ही परिश्रम करके उन्होंने सारे बर्तन साफ किए और सीधे ही नहा-धोकर सुबह छः बजे अक्षरदेरी में पहुँच गए। प्रदक्षिणा करके, महापूजा में बैठ कर, साढ़े-सात बजे ऊपर ठाकुरजी के दर्शन करके कमरे की ओर जा ही रहे थे कि प्रेमप्रकाशस्वामी ने गाँव से सब्जी लाने के लिए उन्हें कहा– 'चल बैठ जा बैलगाड़े में। हमें सब्जी वगैरह लेकर आना है।' प्रभुदासभाई तो तुरंत ही बैलगाड़ी में बैठ गए। प्रेमप्रकाशस्वामी को उन्होंने इतना भी नहीं कहा कि– 'स्वामिजी ! मैं सारी रात का जगा हुआ हूँ और कल सारे दिन का भूखा हूँ। मुझे थकान लगी है, मुझे सो जाना है।'

उन्होंने सारा दिन किसी को यह खबर भी पड़ने नहीं दी। 'रामोद' और आस-पास के गाँवों में से सब्जी इत्यादि लेकर बैलगाड़ी रात को ठीक ग्यारह बजे मंदिर में वापिस लौटी। सारे दिन में खीरे के दो-चार टुकड़ों के सिवा प्रभुदासभाई ने कुछ भी खाया नहीं था। फिर भी शरीर पर या चेहरे पर थकान दिखाई नहीं दे रही थी। सेवा की उमंग को ज़रा भी कम नहीं होने दिया था। **'ठाकुरजी की ऐसी अद्भुत सेवा हमें कहां से मिले ?'** उसी के आनंद और उमंग में रह कर प्रभुदासभाई तो बापा को ही याद करते रहे थे।

प्रेमप्रकाशस्वामी एक पत्तर में गांठिया, बुंदी, मगज़ वगैरह लेकर प्रभुदासभाई को खाना खिलाने के लिए पहुँच गए। अचार भी रखा, छाछ भी दी। प्रभुदासभाई हाथ-पैर धोकर खाना खाने बैठे, वहां तो मानो अणुबम्ब का एक बड़ा धमाका हुआ ! मुश्किल से दो-तीन गांठिया मुँह में रखे होंगे कि एक साधु घूमता-घूमता वहां आ पहुँचा और कड़े शब्दों में बोल उठा– 'क्या अकेले-अकेले खा रहा है ? जो 'स्वादी' होता है वह यूं रात को अकेले खाना खाने बैठता है। अकेले खाते हुए शर्म नहीं आती ? रसोई बंद हुए अभी बस दो घंटे भी तो नहीं हुए कि यूं कहां फिर झपटने बैठ गया ?'

उस साधु की ऐसी अल्लड़ भाषा सुन कर प्रभुदासभाई तो कुछ खा ही नहीं सके ! दो दिन के भूखे प्रभुदासभाई सभामंडप में आए, बापा के दर्शन करके, कमरे में पहुँच गए। पेट में भूख की आग थी, पैर दुःख रहे थे, शरीर शिथिल हो गया था। वे एक ही विचार में थे कि 'किसी का कोई दोष नहीं है। बापा जो करते होंगे, अच्छे के लिए ही करते होंगे।' फिर, मन ही मन खुद प्रभु को पूछ रहे थे कि– 'हे बापा ! क्या मैं स्वादिया हूँ ? क्या

मुझे मेरे देह में आपसे ज्यादा प्रीति है ?' यूं मनोमन बापा को ऐसे निर्दोष प्रश्न पूछते-पूछते वे सो गए।

सुबह जल्दी उठ कर साढ़े पाँच बजे प्रभुदासभाई बापा के दर्शन करने पहुँच गए। हँसते-हँसते स्वामीबापा ने उन्हें धप्पा मारते हुए कहा– 'लो गुरु, आशीर्वाद। **देह को दुश्मन माने वह साधु ! मुझे तो तुम्हें सच्चा साधु बनाना है।'** यह सुन कर प्रभुदासभाई के दिल में खूब ठंडक हो गई। बापा के आशीर्वाद मिले। **बापा की नज़र से बाहर तो कोई चीज़ नहीं है ना ! बापा तो प्रसन्न हुए हैं ना !** ऐसे विचार में प्रभुदासभाई खूब आनंद में ही रहे। दो दिन की भूख और थकान की वेदना भी टल गई। मानो कोई नई ही चेतना शरीर में प्रगट हो गई ! रोम-रोम आनंद से पुलकित बना। 'जीव का जीवन खुराक नहीं, बल्कि प्रभु ही जीव का जीवन है'– ऐसा भीतर में बैठ गया। बापा ने हँसते-हँसते फिर धप्पा मार कर कहा– 'देखो, आज तो बड़ा उत्सव है, सभी को परोस कर बाद में भोजन करना। सेवक तो सभी को खाना खिला कर फिर खाता है। देहभाव तो देहधारी में होता है, हम तो ब्रह्मरूप हैं।' **प्रभुदासभाई की बापा के साथ की प्रीति ऐसी दृढ़ थी कि यह आदेश मिलने पर तुरंत ही दोबारा सेवा में जुड़ गए।**

उस दिन गोंडल मंदिर में दस-पंद्रह हजार लोगों का खाना था। चारों ओर हरिभक्तों की खूब भीड़ लगी थी। देह को गिने बिना प्रभुदासभाई सारा दिन परोसने की सेवा में और रसोई की सारी व्यवस्था में जुटे रहे। शाम को चार बजे मुश्किल से खाना खिलाने की सेवा पूरी हुई। थकान से चूर होने के बावजूद श्रद्धा की मूर्ति समान प्रभुदासभाई ने एक-दो मित्रों को साथ लेकर सारी रसोई साफ कर दी। शाम को पाँच बजे आखिर में प्रभुदासभाई खाना खाने बैठे। पत्तर बिछाया और मुँह में निवाला रखने ही जा रहे थे कि वहां तो एक सेवक दौड़ता-दौड़ता आ पहुँचा और बोला– 'बापा आपको याद कर रहे हैं।'

यह सुन कर प्रभुदासभाई को बापा ने सुबह जो आशीर्वाद दिए थे, उसकी स्मृति ताजी हो गई। तुरंत ही वे बापा के कमरे की ओर दौड़े। बापा ने उन्हें पूछा तक नहीं कि– 'तुमने खाना खाया क्या ?' उसके बजाय कहा कि– 'गुरु ! चलो हमें नहला दो। आज तो खूब थक गए हैं। सारी थकान उतार दो।' प्रभुदासभाई ने खूब ही आनंद में आकर बीस-पच्चीस बाल्टी पानी से बापा को स्नान करवाया। वे अपनी देह का ख्याल भूल गए। भूख-थकान बिलकुल ही नहीं रही !

बापा ने धोती बदलते-बदलते उनकी ओर ऐसी एक मीठी दृष्टि कर दी कि उनका दिल मानो कोई अपार आनंद में हिलोरे मारने लगा। प्रसन्नता प्राप्त करने का मौका लूट लिया ! फलस्वरूप दिल में शांति अनुभव होने लगी और वहीं स्वामीबापा बोल उठे कि– 'तीन-तीन दिन से भूखे प्रभदासभाई को तो आज मुझे ही खाना खिलाना है। देह को गिना नहीं, मन को भी गिना नहीं, किसी का अभाव लिया नहीं और दिव्यभाव रख कर सेवा ही करते रहे। अहोहो ! प्रभुदासभाई ने कैसी कसनी सही ?' यूं बोल कर बापा ने उन्हें गले लगा लिया !

भगवान का स्वरूप भक्त को सामने से गले लगे, प्रेम से भिगो दे, इससे अधिक भक्त के जीवन की अन्य धन्यता भला क्या हो सकती है ? कोई अनुपम उल्लास प्रभुदासभाई के रोम-रोम में प्रगट हो चुका था। उनके मन में हमेशा एक ही विचार रहता था कि–

'जिस पुरुष के लिए मैं गोंडल आया हूँ, वे पुरुष तो मुझ से राजी हुए हैं ना !'

फिर तो वे रसोई की ओर खाना खाने भी नहीं गए और फिर से सेवा में जुड़ गए। **प्रभु जिसे खुद के प्रेमरस से भर दे, उसे फिर तृप्ति के लिए कोई जरूरत पड़ती है क्या ?**

उस दिन रात को आठ बजे 'वासुदेव हरे' हुआ। उस समय भी प्रभुदासभाई तो सेवा में ही लगे हुए थे। वे एक ही विचार में थे कि– 'स्वामी ने कहा है कि खाना खिलाने मैं आऊँगा। सो, मैं खुद कैसे अपने आप खाना खा लूँ ?'

सभी हरिभक्तों के खाना खाने के बाद स्वामीबापा रसोई में पहुँच गए ! 'चलो गुरु ! आज तो खाना खिलाएं। बहुत निर्दोषबुद्धि रखी। ऐसे सेवक तो ढूंढ़ने पर भी ना मिलें'– यह कह कर बापा ने खुद ही थाली ली और उसमें खिचड़ी परोसी। उन्होंने ही उसमें भरपूर घी डाला और खिचड़ी फेंट कर मलाई जैसी बना दी। सौ माताओं का एक ही लड़का हो और जैसा प्रेम उस लड़के को मिले ऐसे बापा के वात्सल्य धोध में प्रभुदासभाई की सारी क्षुधा शांत हो गई। प्रभुदासभाई के अंतर में से तो एक ही उद्‌गार निकल रहा था कि– 'कैसे बापा और कैसी उनकी प्रीति !'

खाना खिलाने बापा खुद उनके सामने ही बैठ गए और प्रसन्न होकर सहज ही बोल उठे– 'गुरु ! शास्त्रीजी महाराज की तुमने खूब शोभा बढ़ाई है। शास्त्रीजी महाराज की छाती ठंडी कर दी। कैसी निर्दोषबुद्धि से सेवा कर ली ! जाओ, आज से इकत्तर कोठे ठण्डे हो गए !'

गुरुहरि योगीजी महाराज के अंतर की प्रसन्नतापात्र ऐसी विभूति प.पू. स्वामिजी हमारे जीवन में आए, हमें उनके दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ मिला। अब हम खाली बैठ कर, ग्राम्यवार्ता में, सोने में, आलस में या दूसरों के अभाव-

अवगुण की टीका-चर्चा में एवं हल्के विचारों में हमारा समय ना बिगाड़ कर, बल्कि अहोभाव, महिमा, सेवा एवं गुणातीत पुरुषों के ऐसे प्रसंगों का मनन-चिंतन करके उन्हें अन्तर्यामी मान कर ऐसी 'सेवा' करके उन्हें प्रसन्न करने की नित्यनवीन उमंग-चाहना बढ़ाएं। प.पू. स्वामिजी के शब्दों में 'भुल्का की यात्रा पर आगे बढ़ें'– यही उनकी जन्मजयंती पर हम सभी की प्रार्थना !

✡✡✡

प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की सेरेछाया में 2,3 फरवरी को प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार स्वर्णजयंती वर्ष में मुंबई-पवई में भव्य मूर्तिप्रतिष्ठा महोत्सव...

ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री योगीजी महाराज ने सन् 1964 के मई मास में 'पवई' में एक 'सत्संग' रखा था और तब पहाड़ी पर फिलहाल जहां आज मंदिर बना है, वहां दृष्टिपात करके **'यहां बड़ा मंदिर होगा और तसु-तसु जमीन की कीमत होगी'**– ऐसे भव्य आशिष दिए थे।

साकार ब्रह्म की यह परावाणी साकार हुई ! गुणातीत समाज के सेनापति प.पू. कांतिकाका के सुपुत्र पू. घनश्यामभाई अमीन, ताड़देव के नव योगेश्वरों एवं समर्पित गृहस्थ समाज ने भजन-भक्ति व समर्पण की भावना से मुंबई-पवई में **'आंतरराष्ट्रीय रिसर्च स्पीरीच्युअल केन्द्र'** की स्थापना करके मानो प.पू. काकाजी को अमर कर दिया। **दिल्ली व मुंबई– दोनों जगह बने मंदिर इस बात के सशक्त प्रमाण हैं कि समर्थ गुरु स्थूल शरीर छोड़ने के बाद भी आश्रित चैतन्यों की परवरिश करके उनकी कैसी अद्भुत प्रगति कराता है।** इतना ही नहीं, **युगों युगों तक ऐतिहासिक मिसाल बन कर प.पू. काकाजी के तत्त्व से प्रगट होने की ये अखंड प्रतीति कराते रहेंगे।** सच ! प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई व प.पू. भरतभाई – ताड़देव के नव योगेश्वरों ने अपने वर्तन से प.पू. काकाजी को जीवंत रखा है।

प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने पहली फरवरी की सुबह गोल्डन टेम्पल मेल से प.पू. गुरुजी के साथ दिल्ली-पंजाब के करीब 80 मुक्तों मुंबई जाने निकले... 2 फरवरी की सुबह हीरानंदानी के विशाल परिसर में मंडप बांध कर 'यज्ञ' का आयोजन किया हुआ था। मंदिर में प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों के सम्मुख श्लोकों के मंत्रोच्चार के साथ पवित्र भक्तिमय दिव्य वातावरण में देश-विदेश के तकरीबन एक हजार दम्पति 'यज्ञ' का लाभ ले रहे थे। यज्ञ की पूर्णाहुति के समय प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई, संतमंडल, बहनों में प.पू. बेन, प.पू. ज्योति बहन, पू. देवी बहन, पू. प्रेम बहन, पू. दीदी, पू. योगिनी बहन के दर्शन करके सभी धन्य हुए !

यज्ञ की पूर्णाहुति होनेपर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने **'तू रहे सदा मेरी याद में भाग-3'** भजन की कैसेट का अनावरण किया और प.पू. गुरुजी व पू. घनश्यामभाई अमीन ने मिल कर प.पू. काकाजी के जीवन पर आधारित 'काका हे अमर रहो' स्तवन की दो कैसेट का उद्घाटन किया।

2 फरवरी की शाम को मूर्तियों की भव्य **शोभा यात्रा** का आयोजन था। सभी गुणातीत स्वरूप रथ पर विराजमान थे और संतों, बहनें, युवक, गृहस्थ गाते-गाते नाचते-कूदते झूमते हुए ब्रह्मानंद में मस्त थे। मुंबई जैसी जगह पर ट्रैफिक की भीड़ में पाँच-छः हजार भक्तों का काफिला चल रहा था। शोभायात्रा लगातार चार घंटे चली ! रात का प्रसाद लेकर सेवकगण अगले दिन के महोत्सव की तैयारी में लग पड़ा।

3 फरवरी की मंगलकारी सुबह सर्व गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद और चार पंखुड़ियों के गुणातीत समाज के मुक्तों के सान्निध्य में आंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र में खूब ही पवित्रता व भक्ति-भावभरे माहौल में मूर्तिप्रतिष्ठा विधि संपन्न हुई। प.पू. गुरुजी के साथ एक अनन्यभाव व आत्मीयता के रिश्ते से जुड़े **केंद्रीय वस्त्र मंत्री सत्संगीबंधु माननीय श्री काशीरामभाई राणा साहेब** मूर्तिप्रतिष्ठा के समय उपस्थित रहे। करीब छः महीने में ही निर्मित यह मंदिर मानो प.पू. काकाजी का एक 'अद्भुत करिश्मा' था। **मंदिर का कण-कण पू. घनश्यामभाई व ताड़देव के नव योगेश्वरों की प.पू. काकाजी के प्रति की अजोड़ भक्ति, अटूट भरोसा, दृढ़ निष्ठा व बुद्धि से परे के विश्वास की मानो कहानी बता रहा था।** धन्यवाद-धन्यवाद इस योजना में याहोम होने वाली हर एक व्यक्ति की महिमायुक्त भक्ति-भावना को। तभी तो प.पू. पप्पाजी ने भी आशीर्वाद पत्र में लिख दिया कि– **'इस मंदिर में धाम-धामी-मुक्त प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप अखंड हाज़िर ही हैं। यहां कोई जो भी मनोरथ करे, उसे महाराज सिद्ध करें व सभी को अक्षरधाम का सुख, शांति, आनंद मिले।'**

मूर्तिप्रतिष्ठा विधि के बाद सभी सभा स्थल पर पधारे। स्टेज पर अक्षरधाम की पूरी केबिनेट विराजमान थी। **86 वर्ष की उम्र में प.पू. पप्पाजी तो जैसे कि अपने अनुज को असीम प्यार की भावांजली अर्पित कर रहे थे।** अतिथि विशेष **डॉ. सतीश वोरा** ने प.पू. काकाजी के प्रति अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा–

'काकाश्री कहते थे कि क्रांतिकारी रूप में परमात्मा पधारते हैं। जब ऐसी युगप्रवर्तक शक्ति आती है, तब उससे जुड़ी और व्यक्तियाँ भी आती हैं। यह ईश्वर की व्यवस्था है - ना कि चमत्कार ! सो, आप सब ईश्वर के अंशावतार हो।'

पू. हरिभाई कोठारी ने भी अनेक उदाहरण देकर अपने लाक्षणिक भाव व शैली से सभी को प.पू. काकाजी की स्मृतियों में लीन कर दिया। मानो प.पू. काकाजी ही उनमें से बोल रहे हों ऐसा सभी को एहसास हुआ।

तत्पश्चात् पूज्य महेन्द्र बापू, पूज्य निर्मलस्वामिजी, परम पूज्य दिनकरभाई, परम पूज्य गुरुजी, पूज्य भरतभाई ने प.पू. काकाजी की महिमा गाकर उनके सिद्धांतों पर चलने का अनुरोध करा।

अत्यधिक परिश्रम व भक्ति से तैयार किया हुआ प.पू. काकाजी को खूब पसंद **'स्वामी की बातों'** का चौदह प्रकरण के ग्रंथ का **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के वरद् हस्तों उद्‌घाटन हुआ।** प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी व प.पू. साहेब ने प.पू. काकाजी के माहात्मयगान के साथ नव योगेश्वरों व उनसे जुड़े सभी मुक्तों की भावना पर अंतर की प्रसन्नता बताई। सभा में बैठे हुए मुक्तों के दिल में प.पू. काकाजी की लुभावनी मूर्ति की स्मृतियाँ छाई हुई थीं। अंतर से प्रार्थना निकल रही थी–

'हे काकाजी ! आपने स्वयं का बलिदान देकर हमारे लिए राजमार्ग तैयार कर दिया। आपका ऋण हम कभी ना भूलें। आपको खूब पसंद स्वरूपनिष्ठा, निर्दोषबुद्धि व मैत्रीभाव के सिद्धांतों की ओर सदैव नज़र रहे।'

✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	17.3.2003,	सोमवार	– होली, ब्र. स्व. भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन
(2)	दि.	18.3.2003,	मंगलवार	– धुलेण्डी, प्र. ब्र. स्व. प.पू. साहेब का प्रागट्य दिन
(3)	दि.	28.3.2003,	शुक्रवार	– एकादशी, व्रत
(4)	दि.	30.3.2003,	रविवार	– **प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन सायं 5:30 से 9:00 'ताड़देव' में मनाएंगे**
(5)	दि.	11.4.2003,	शुक्रवार	– रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(6)	दि.	13.4.2003,	रविवार	– एकादशी, व्रत
(7)	दि.	15.4.2003,	मंगलवार	– ब्र. स्व. योगीजी महाराज का दीक्षा दिन
(8)	दि.	27.4.2003,	रविवार	– एकादशी, व्रत
(9)	दि.	4.5.2003,	शनिवार	– प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्म जयंती, अखात्रीज
(10)	दि.	12.5.2003,	सोमवार	– एकादशी, व्रत
(11)	दि.	14.5.2003,	बुधवार	– नृसिंह जयंती

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine

Despatched on 15th of alternate months from January

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor :—

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,

Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327, 2724 9327

Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**

Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 2595 0443

Printed at : **Delux Offset Printers**

308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,

Daya Basti, Delhi

TO,